

पंडित तुलसीदास बोरकर

Pandit Tulsidas Borkar



पद्म श्री

Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

पंडित तुलसीदास बोरकर

पंडित तुलसीदास बोरकर हारमोनियम वादन के क्षेत्र में अग्रणी नामों में से एक हैं तथा वह भारत के सबसे प्रसिद्ध संगीतज्ञों में से एक हैं।

2. आपका जन्म नवम्बर 18, 1934 को हुआ था। आपने आरंभिक शिक्षा अपनी माता से तथा इसके पश्चात श्री विष्णुपंत वस्ता तथा श्री छोटा गंधर्व से प्राप्त की। तथापि, हारमोनियम में प्रशिक्षण का आपका अधिकांश भाग हारमोनियम के महाज्ञाता पंडित मधुकर पेंडनेकर के अंतर्गत हुआ। आपने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत (उत्तर भारत) की ख्याल परंपरा की सूक्ष्म तकनीकी या कुछ अन्य अनुभवी गायको से सीखी। आरंभ में आपने मराठी नाट्यमंच संगीत में एक आर्गन वादक के रूप में ख्याति प्राप्त की। वर्ष 1950 से 1980 के बीच आपने मराठी नाट्यमंच के कई बड़े कलाकारों के साथ संगति की। आपको हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कई महान कलाकारों से संगति करने का अवसर भी प्राप्त हुआ जिसमें कुछ नाम हैं – पंडित मल्लिकार्जुन मंसूर, पंडित फिरोज दस्तूर, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित बासवराज गुरू, पंडित वे.बी. जोशी, पंडित जीतेन्द्र अभिषेकी, पंडित रस्म मराठे, पंडित गंगूबाई हंगल, पंडित किशोरी आमोनकर, पंडिता शोभा गुर्तू तथा डॉ. प्रतिभा आत्रे।

3. एक प्रसिद्ध हारमोनियम संगीत कलाकार के अतिरिक्त, आपने एक एकल प्रदर्शन में भी ख्याति प्राप्त की है तथा पूरे विश्व में कई प्रसिद्ध रिकॉर्ड लेबल संगीत कंपनियों द्वारा आपके रिकॉर्ड व्यवसायिक स्तर पर तैयार किए गए हैं। कई विद्यार्थी जिनको आपने प्रशिक्षण दिया है तथा जो वर्तमान में प्रसिद्ध कलाकार एवं रचनाकार हैं, आपके गुरू के रूप में अमूल्य योगदान की पुष्टि करते हैं। आपने हार्मोनियम बजाने की कला के बारे में 'समवादिनी साधना' नामक एक पुस्तक की रचना की है जिसको हिन्दी और मराठी में प्रकाशित किया गया है। आपने हार्मोनियम के विद्यार्थियों के लिए एक पाठ्यक्रम बनाने में मुख्य भूमिका अदा की है जिसे पुणे विश्वविद्यालय (ललित कला केन्द्र) तथा कोल्हापुर विद्यालय (शिवाजी विद्यापीठ) द्वारा स्वीकृत किया गया एवं मान्यता प्रदान की गई है।

4. आपको भारतीय संगीत के क्षेत्र में योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिसमें वर्ष 2015 के लिए संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप पुरस्कार, नई दिल्ली, वर्ष 2015 के लिए शारदा संगीत विद्यालय द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार, हृदयेश आर्ट द्वारा हृदयेश संगीत सेवावृत्ति पुरस्कार, जी एस सी मण्डल द्वारा पंडित भीमसेन जोशी स्मृति पुरस्कार, डोम्बीविली (2013), कला एवं संस्कृति निर्देशालय, गोवा सरकार (2007) द्वारा उत्कृष्टता के लिए राज्य पुरस्कार, पंडित वंदुभैया चौगुले स्मृति पुरस्कार, इन्दौर (2014), सुरेल समवादिनी सम्बर्धन बेलगाम (2002) द्वारा पंडित विट्ठल राव कोरगांवकार स्मृति पुरस्कार, मराठी नाट्य परिषद, मुबंई (2001) से संगीतकार पदमश्री वसंत देसाई पुरस्कार, योजना प्रतिष्ठान एवं निर्गुडकार फाउंडेशन (2000) द्वारा मास्टर दीनानाथ मंगेशकर स्मृति गुण गौरव पुरस्कार, श्रीमन्त माधव राव महाराज शिन्दे (1999) द्वारा प्रायोजित अखिल भारतीय मराठी नाट्य परिषद द्वारा बालगंधर्व गौरव पुरस्कार, अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय, पुणे (19 जनवरी, 1998) द्वारा गोविंदराव तेंबे संगतकार पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आपको 2016 में गोवा सरकार से भी प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ है।

Pandit Tulsidas Borkar

Pandit Tulsidas Borkar, a leading name in the field of harmonium playing, is one of the most outstanding musicians of India.

2. Born on November 18, 1934 Pandit Borkar had his initial lessons in music from his mother and later by Shri Vishnupant Vasta and Shri Chhota Gandharva. However, a major part of his training in Harmonium was under the guidance of the harmonium maestro Pt. Madhukar Pednekar. He learnt the intricacies of the Khayal tradition of North Indian (Hindustani) Classical music by some other veteran vocalists. He gained initial fame as an organ player in Marathi theatrical music. He accompanied several leading actor-singers of Marathi theatre between the years 1950 and 1980. He also had the privilege of accompanying many stalwarts in the field of Hindustani Classical Music like Pandit Mallikarjun Mansur, Pandit Firoz dastrur, Pandit Bhimsen Joshi, Pandit Basavraj Rajguru, Pandit Y.B. Joshi, Pandit Jitendra Abhisheki, Pandit Rasm Marathe, Pandita Gangubai Hangal, Pandita Kishori Amonkar, Pandita Shobha Gurtu and Dr. Prabha Atre to name a few.

3. Apart from being a reputed harmonium accompanist, Pt. Borkar has also gained repute as a soloist and has been commercially recorded by many eminent Record Labels all over the world. The many disciples whom he has groomed as renowned performers and composers of today, proves his invaluable contribution as a Guru. He has authored a book on the art of playing the harmonium titled 'Samvadini Sadhana' which has been published in Hindi and Marathi. He has also been instrumental in designing a syllabus for Harmonium students which has been accepted and recognized by the Pune University (Lalit Kala Kendra) and University of Kolhapur (Shivaji Vidyapeeth).

4. Pt Borkar has been honoured with many awards for his contribution in the field of Indian Music including Sangeet Natak Akademi Fellowship Award, New Delhi for the year 2015; Sangeet Natak Akademi Award, New Delhi for the year 2005; Lifetime achievement award by Sharda sangeet vidyalaya in 2015, Hridayesh Sangeet Sevavrati puraskar by Hridayesh arts (2014), Pandit Bhimsen Joshi Smruti puraskar by GSB Mandal, Dombivli (2013), State Reward for Excellence by the Directorate of Art & Culture, Govt. of Goa (2007), Pt. Bandubhaiya Chaughule Smruti Puraskar, Indore (2004), Pt. Vitthalrao Korgaonkar Smruti Puraskar by Surel Samvadini Samvardhan-Belgaum (2002), Sangeetkar Padmashree Vasant Desai Puraskar from Marathi Natya Parishad, Mumbai (2001), Master Dinanath Mangeshkar Smruti Gungaurav Puraskar by Yojana Pratishthan & Nirgudkar Foundation (2000), Balgandharva Gaurav Puraskar by Akhil Bhartiya Marathi Natya Parishad sponsored by Shrimant Madhavrao Maharaj Shinde (1999), Govindrao Tembe Sangatkar Puraskar by Akhil Bhartiya Gandharva Mahavidyalaya, Pune (19th January 1998). He also got Felicitation from Government of Goa in 2016.